सत्यमेव जयते

কোডা পারসি প্রবেশিকা
কোড়া ভাষা প্রবেশিকা
कोडा भाषा प्रवेशिका
KODA (KORA) PRIMER

CIIL-NCERT Primer Series

ई-पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।

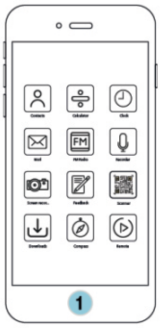

प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें

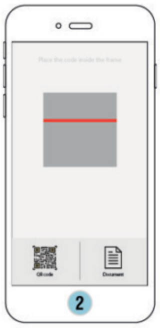

क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें

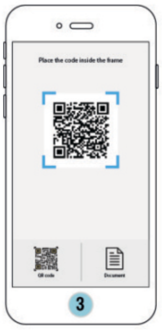

स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें

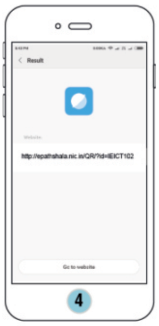

लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें

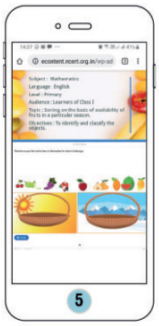

उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।

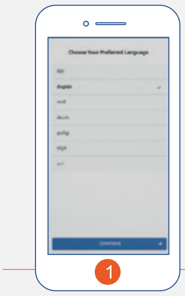

अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें

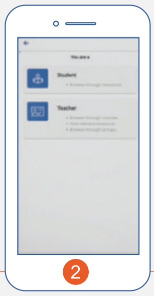

अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी

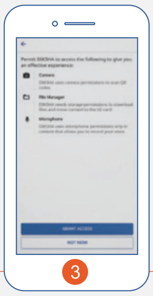

पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें

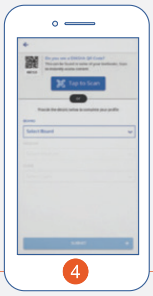

क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें

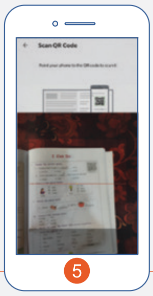

कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें

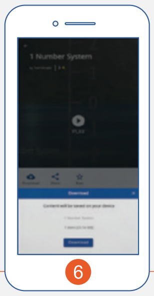

क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

কোডা পারসি প্রবেশিকা

কোড়া ভাষা প্রবেশিকা

कोडा भाषा प्रवेशिका

KODA (KORA) PRIMER

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GOI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

কোডা পারসি প্রবেশিকা

কোড়া ভাষা প্রবেশিকা

कोडा भाषा प्रवेशिका

KODA (KORA) PRIMER

A basal reader of Koda (Kora) alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors
Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Samiran Kora
Sanjiban Mandal

ISBN: 978-81-977442-1-1

First Edition: July, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: G. Yuvaraj
Cover Photo: Dinesh Mudi, Ashis Kora, Ananda Konra

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
Minister of Education
Government of India

संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की तत्काल आवश्यकता है।

अतः हमने एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ माननीय प्रधानमंत्री जी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यधिक उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.sm@gov.in

संजय कुमार, भा.प्र.से
सचिव

Sanjay Kumar, IAS
Secretary

भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
Government of India
Ministry of Education
Department of School Education & Literacy

संदेश

मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति को आकार देने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। भाषा एक समूह की विशेषताओं को परिभाषित करने के साथ-साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान संचार का माध्यम भी है। भाषा सभ्यता को आगे बढ़ाने और मनुष्य को अधिक उन्नत स्थिति तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा के माध्यम से विज्ञान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के रूप में प्रसारित ज्ञान देश भर के सभी बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में सीखने-सिखाने पर बल देती है। भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन के उद्देश्य से एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के अथक् प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में सीखने सिखाने हेतु प्रवेशिकाओं का विमोचन किया जा रहा है। ये प्रवेशिकाएँ मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने और बच्चो में विभिन्न अवधारणाओं की समझ विकसित करने में सहायक होंगी। साथ ही राज्यों और शैक्षिक एजेंसियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकेगी। हमारे लिए इन प्रवेशिकाओं को शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षाविदों तथा अन्य हितधारकों तक पहुँचाना गर्व की बात है।

इस अवसर पर मैं प्रवेशिकाओं के निर्माण से जुड़े सभी सदस्यों, विशेषज्ञों एवं विभिन्न भाषायी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके बहुमूल्य योगदान से इन प्रवेशिकाओं को विकसित करना संभव हो पाया है। मुझे विश्वास है कि इन प्रवेशिकाओं से विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों, प्रधानाध्यापकों और शिक्षा के अन्य हितधारक लाभान्वित होंगे।

(संजय कुमार)

124 'सी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001
124 'C' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110001
Telephone: +91-11-23382587, +91-11-23381104 Fax : +91-11-23387589
E-mail: secy.sel@nic.in

प्राक्कथन

भाषा समाज का एक अभिन्न अंग है। भाषा संस्कृति का एक उपादान है, समुदाय की पहचान है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी है। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है-एक ओर भारत की भाषिक विविधता को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। साथ ही यह भी बताता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारतीय संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं के मुद्दों पर हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित बिंदु है कि बच्चों के पास भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों-ये किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को '*बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति*' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह मज़बूत नींव न केवल भविष्य में विद्यालय एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित होंगे।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं (प्राइमर्स) का लक्ष्य छोटे बच्चों या अन्य भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से सुपरिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों; जैसे- बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी। शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

जुलाई 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका / Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्यधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilised efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to ‘Viksit Bharat’. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognising, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarises children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

দেশের বিভিন্ন অঞ্চলে বিভিন্ন কথ্যভাষা নিয়ে ভারত যুগযুগ ধরে একটি বহুভাষী এবং বহু সংস্কৃতির দেশ। কথোপকথনে একাধিক ভাষা ব্যবহার করা দেশের একটি সাধারণ বৈশিষ্ট্য; এটি আমাদের একত্রে আবদ্ধ করে এবং ঐক্যবদ্ধ রাখে। জাতীয় শিক্ষানীতি (NEP)2020 দৃঢ়ভাবে এই ধারণার উপর জোর দেয় যে, ভারতের বহুভাষিক প্রকৃতি একটি বিশাল সম্পদ যা দেশের সামাজিক-সাংস্কৃতিক, অর্থনৈতিক এবং শিক্ষাগত উন্নয়নের জন্য দক্ষতার সাথে ব্যবহার করা প্রয়োজন। এটি প্রতিটি স্তরে শিক্ষায় বহুভাষিকতা প্রচারের সুপারিশ করে, যাতে শিক্ষার্থীরা তাদের নিজস্ব ভাষায় পড়াশুনা করার সুযোগ পায়। সমস্ত ভারতীয় ভাষায় শিক্ষণ ও শিখন উপকরণ তৈরি এই বহুভাষিক সম্পদকে বাড়িয়ে তুলবে এবং ‘বিকশিত ভারত’ এর রূপকল্পে আরও ভালো অবদান রাখবে। বলা হয়েছে, জাতীয় শিক্ষানীতি (NEP) 2020এর সঙ্গে সামঞ্জস্য রেখে নবপর্যায়ের প্রাথমিক পাঠ্যপুস্তক বিকাশের জন্য একটি ব্যাপক ও অন্তর্ভুক্ত পদ্ধতির প্রয়োজন যা ভারতে প্রতিটি অঞ্চলের অন্যান্য ভাষাগত এবং সাংস্কৃতিক বৈশিষ্ট্যগুলিকে সম্বোধন করে। এই প্রাথমিক পাঠ্যপুস্তকগুলির উদ্দেশ্য হল পড়া ও লেখার ক্ষেত্রে শুধুমাত্র ভাষার দক্ষতা প্রদান করা নয় বরং প্রাথমিক পর্যায়ের শিক্ষার্থীদের সৃজনশীলতা এবং সমালোচনামূলক চিন্তাভাবনাকে উৎসাহিত করা। এটি একটি ভাষার বর্ণ মালার লিপি এবং প্রতীক ও উচ্চারণ স্বীকৃতির চাবিকাঠি। প্রাথমিক পাঠ্যপুস্তকগুলি লিপির এক বা একাধিক পর্যায়ের সঙ্গে শিশুদের পরিচয় করিয়ে দেয় যা বর্ণগুলির সংমিশ্রণের মাধ্যমে তৈরি করা হয়, যেমন শব্দের প্রাথমিক, মধ্যবর্তী ও চূড়ান্ত অবস্থানের লিপি বা বর্ণ। সেইসঙ্গে এটি এমন উদাহরণ তৈরি করে যা পরবর্তিতে প্রবর্তিত লিপি লেখার অনুশীলনকে সহজতর করবে এবং ছড়াগুলি শিক্ষার্থীদের ভাষা বিকাশ এবং জ্ঞানীয় দক্ষতায় সাহায্য করবে।

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरू

जुलाई 2024
मैसूरु

CIIL-NCERT Primer Series: Koda (Kora) Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra P. Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology (CIET), NCERT, New Delhi
Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Basanta Kumar Panda, Project Director, Centre of Excellence for Studies in Classical Odia, Bhubaneswar
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Binay Pattanayak, Senior Researcher cum Chief Consultant, NCERT, New Delhi
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru
Ravindra Kumar, Associate Professor, CIET, NCERT, New Delhi

Member Coordinators

Sujoy Sarkar, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru
Sanjaya Kumar Bag, Odia Lecturer, Eastern Regional Language Centre (ERLC), CIIL, Bhubaneswar

Resource Persons

Samiran Kora, Assistant Professor , Netaji Nagar College for Women , Kolkata
Sanjiban Mandal , Resource Person (Teaching) ERLC, CIIL , Bhubaneswar
Sudipta Bhattacharjee, Senior Resource Person (SRP), Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru

Bengali Reviewer

Bholanath Saren, Resource Person (Teaching) ERLC, CIIL , Bhubaneswar

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission (NTM), CIIL, Mysuru
Saravanan A S, Graphic Editor, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru
Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

‘কোড়া ভাষা প্রবেশিকা’ বইটি কিভাবে পড়াবেন

ভারতবর্ষের একটি প্রাচীন আদিবাসী জনগোষ্ঠী ‘কোড়া’। যাদের উপস্থিতি বিহার, ওড়িশা ও ঝাড়খণ্ড রাজ্যে লক্ষ্য করা গেলেও এই সম্প্রদায়ের বসবাস সবথেকে বেশি সংখ্যায় দেখা যায় পশ্চিমবঙ্গে। ২০১১ আদমশুমারি অনুযায়ী ১,৫৯,৪০৪ জন কোড়া জনজাতির মানুষ বসবাস করে পশ্চিমবঙ্গের একাধিক জেলার বিভিন্ন প্রান্তে। ‘মাটি খনন’ পেশাকে কেন্দ্র করে যাদের নামকরণ, সেই কোড়া সম্প্রদায়ের মধ্যে রয়েছে নিজস্ব উৎসব-অনুষ্ঠান, আচার-আচরণ ও রীতিনীতিতে ভরা ঐতিহ্যবাহী এক আদিম জীবন-সংস্কৃতি। যে সংস্কৃতিকে তারা প্রজন্ম থেকে প্রজন্মান্তরে লালিত পালিত করে আসছে আপন অনুভূতিতে, উপলব্ধিতে ও চেতনার নানান রঙে। আর এই সংস্কৃতিই তাদেরকে স্বতন্ত্ররূপ দিয়ে থাকে পৃথক জাতি রূপে। কোড়া জনগোষ্ঠীর এই স্বতন্ত্রতার একটি অন্যতম উপাদান তাদের ভাষা। যে ভাষা অস্ট্রিক ভাষা গোষ্ঠীর অন্তর্গত এবং কোড়ারা সাধারণত তাদের ভাষাকে ‘কোডা’ ভাষা হিসাবে পরিচয় দিয়ে থাকে। উৎসব প্রিয় এই কোড়া জনগোষ্ঠী সারা বছর ধরে নানান ধরনের নাচ গান, পূজা পার্বণ নিয়ে মেতে থাকলেও তাদের তিনটি বড় পূজা হচ্ছে গরাম বঙা পূজা, হেঁদে গিডি পূজা এবং বুরুবঙা পূজা। এছাড়াও গৃহ, প্রকৃতি ও কৃষিকেন্দ্রিক বিভিন্ন ধরনের পূজাও তারা করে থাকে।

জাতীয় শিক্ষানীতি ২০২০ এবং মৌলিক স্তরের জাতীয় পাঠক্রম কাঠামো ২০২২ এর অধীনে তিন থেকে আট বছর বয়সী শিশুদের তাদের মাতৃভাষা/স্থানীয় ভাষা/আঞ্চলিক ভাষায় শিক্ষা প্রদানের ব্যবস্থা করা হয়েছে। ভারতের গ্রামাঞ্চলের শিশুরা শ্রেণিকক্ষের শিক্ষা ব্যবস্থা বুঝতে সক্ষম নয়। এই বিষয়টি বিদ্যালয়ের শিক্ষা ব্যবস্থাকে প্রভাবিত করে। এই কারণেই কেন্দ্রীয় সরকার কিন্ডারগার্টেনে তিন থেকে আট বছর বয়সী শিশুদের এবং প্রথম ও দ্বিতীয় শ্রেণির শিশুদের প্রাথমিক স্তরে মৌলিক সাক্ষরতা প্রদানের ব্যবস্থা করেছে।

এতে স্থানীয় গান ও কবিতার মাধ্যমে শিশুদের মৌখিক ভাষার বিকাশের উপর গুরুত্ব দেওয়া হয়েছে। এই প্রবেশিকায় কবিতা ও ছবির মাধ্যমে এ কাজ করা হয়েছে। এর পাশাপাশি শিশুদের ধ্বনি পরিচিতি, বর্ণমালা পরিচিতি ও লেখার অনুশীলনের জন্য ভাষা প্রবেশিকা ব্যবহার করা হয়েছে।

কিন্ডারগার্টেন স্তর থেকে তৃতীয় শ্রেণি পর্যন্ত শিশুদের তাদের মাতৃভাষায় পাঠদান তাদের বুদ্ধিবৃত্তিক বিকাশের পাশাপাশি তাদের সৃজনশীলতা এবং কল্পনাশক্তির বিকাশে সহায়তা করতে পারে। শিশুরা তাদের মাতৃভাষায় পড়তে এবং লিখতে শেখার সময় কিভাবে ধীরে ধীরে বাংলা পড়তে, লিখতে এবং শিখতে পারবে তার সঠিক পদ্ধতিটি প্রাথমিক স্তরের জাতীয় পাঠক্রম কাঠামো ২০২২ এ বিশদভাবে বর্ণনা করা হয়েছে। শিশুরা প্রথমে পড়তে এবং লিখতে শেখে। তাই কোড়া ভাষার প্রবেশিকা বইতে শিশুদের মাতৃভাষার সমস্ত ধ্বনি, বর্ণ এবং চিহ্নের প্রয়োগ দেখানো হয়েছে। বইটিতে দেওয়া শব্দগুলো শিশুদের সংস্কৃতি ও পরিবেশ থেকে সংগ্রহ করা হয়েছে।

বহুভাষিক শিক্ষার মূল লক্ষ্য হল শিশুদেরকে তাদের মাতৃভাষা দ্বারা লেখাপড়া শেখানো শুরু করা এবং তাদের আঞ্চলিক ভাষায় পঠন ও লেখন দক্ষতা বৃদ্ধি করা। কোড়া এবং বাংলা ভাষায় উপস্থাপিত এই পুস্তিকাটি পশ্চিমবঙ্গ রাজ্যের শিক্ষক-শিক্ষিক্ষা এবং ছাত্র-ছাত্রীদের জন্য নির্মিত। মৌলিক সাক্ষরতার চারটি প্রধান পর্যায় রয়েছে। প্রথম পর্বে কবিতা, গল্প ও ছবির মাধ্যমে শিশুদের মেধা বিকাশ করা হয়। এরপরে ভাষা শেখার জন্য শিশুদের শব্দের পাশাপাশি বস্তুর সাথে পরিচয় করিয়ে দেওয়া হয় এবং শব্দে সাজানো বর্ণ বা ধ্বনিগুলির সঙ্গে পরিচয় করানো হয়। এই উপরোক্ত ক্রমানুসারে শিশুরা বিভিন্ন বর্ণ, ধ্বনি বা অক্ষর চিনতে শেখে। এইভাবে শিশুরা শব্দ এবং ধ্বনি বা বর্ণের মধ্যে সংযোগ বুঝতে পারে। ভাষা প্রবেশিকা কিভাবে পড়াতে হবে সেই বিষয়গুলো নীচে উল্লেখ করা হল-

ধ্বনি পরিচয় :

শিশুরা ছবি দেখে বস্তুর নাম বলবে এবং শিক্ষক/শিক্ষিকা জিজ্ঞাসা করবেন ছবির নাম কোন ধ্বনি বা বর্ণ দিয়ে শুরু হয়েছে? যেমন কোড়া ভাষার ‘অড়ে’ শব্দটি। শিশুরা ছবি দেখে চিনবে যে এই শব্দটি ‘অ’ ধ্বনি দিয়ে শুরু হয়েছে।

বর্ণ পরিচয় :

শিক্ষক/শিক্ষিকা প্রথমে বাচ্চাদের বলবেন ‘অ’ ধ্বনি বা বর্ণটি দেখতে কেমন? তারপর তাদের শব্দের মধ্য থেকে ‘অ’ ধ্বনি বা বর্ণটি চিহ্নিত করতে বলা হবে। শিশুরা তিন চারটি শব্দ থেকে ‘অ’ ধ্বনি বা বর্ণটিকে চিহ্নিত করবে। এরপর বর্ণটি উচ্চারণ এবং লেখার অভ্যাস করবে।

পড়া :

শিশুরা ছবি দেখে তাদের নিজের ভাষায় শব্দটি বলবে। সেই শব্দে আঙুল বুলিয়ে শিশুরা কোড়া শব্দ ‘অড়ে’ পড়বে। একইভাবে অন্যান্য শব্দ পড়ে তারা ‘অ’ ধ্বনি বা বর্ণটি চিনবে এবং এটি উচ্চারণ করবে। শব্দের শুরুতে, মধ্যে বা শেষে ‘অ’ ধ্বনি বা বর্ণটি কোথায় এসেছে সেটা শিক্ষক/শিক্ষিকারা শিশুদের বুঝিয়ে বলবেন।

শিক্ষক/শিক্ষিকা বোর্ডে ‘অড়ে’ ছাড়াও তিন চারটি শব্দ আরও লিখবেন। তারপর শিশুদের একে একে ডেকে শব্দগুলো পড়তে বলবেন এবং ধ্বনি বা বর্ণ শনাক্ত করতেও বলবেন। যেহেতু এইসমস্ত শব্দ শিশুদের পরিচিত পরিবেশ থেকে নেওয়া হয়েছে, তাই তারা বই এর ছবি দেখে শব্দগুলো চিনতে পারবে এবং সহজে বলতে পারবে। শিক্ষক/শিক্ষিকা একটি শব্দ লিখবেন এবং শিশুদের প্রতিটি ধ্বনি বা বর্ণ আলাদা ভাবে পড়তে বলবেন। তারপর ধ্বনি বা বর্ণগুলোকে একত্রিত করে উক্ত শব্দটি পড়তে বলবেন। এর মাধ্যমে শিশুরা ধ্বনি, বর্ণমালা ও শব্দের সাথে পরিচিত হবে। যখন একটি শিশু একটি শব্দ পড়বে, তখন অন্যান্য শিশুরা তার সাথে যোগ দেবে এবং শব্দটি পুনরাবৃত্তি করবে। একে বলা হয় ‘সম্মিলিত’ পড়ানো।

লেখা :

শিক্ষক/শিক্ষিকা প্রথমে শিশুদের ‘অড়ে’ শব্দের ধ্বনি বা বর্ণ লিখতে শেখাবেন। এরজন্য শিক্ষক/শিক্ষিকা শিশুদেরকে একটি কলম/পেনসিল কিভাবে ব্যবহার করতে হয় তাও শিখিয়ে দেবেন। একে বলা হয় ‘সমর্থক লেখা’। এরপর শিশুরা নিজেরাই বইটিতে দেওয়া ফাঁকা জায়গায় ‘অ’ বর্ণটি লিখবে। এই পুরো প্রক্রিয়ায় শিক্ষক/শিক্ষিকা শিশুদের সাহায্য করবেন।

শিশুদের মৌখিক ভাষা বিকাশের জন্য প্রতিটি পৃষ্ঠায় দুই চার লাইনের একটি করে কবিতা দেওয়া হয়েছে। শিক্ষক/শিক্ষিকা কবিতাগুলো পড়া বা গান করার পর শিশুদের সাথে আলোচনা করবেন। শিক্ষক/শিক্ষিকা স্কুল লাইব্রেরিতে পাওয়া শিশুদের গল্পের বই থেকে গল্প বর্ণনা করবেন এবং শিশুদের সাথে আলোচনা করবেন।

এই প্রবেশিকায় প্রদত্ত শব্দগুলি সাক্ষরতার একটি নমুনা মাত্র। শিশুরা শত শত শব্দ জানে। অতএব, একটি বর্ণ সমন্বিত একটি শব্দ জিজ্ঞাসা করলে তারা অনেক শব্দ বলতে পারবে। উদাহরণ স্বরূপ, শিক্ষক/শিক্ষিকা জিজ্ঞাসা করবেন – আমাকে ‘অ’ দিয়ে শুরু হওয়া কিছু শব্দ বলো।

শিশুদের সুবিধার জন্য প্রথমে কোড়া ভাষার বর্ণমালা থেকে গান/শব্দ/বর্ণ দেওয়া হয়েছে। কোড়া শেখার সময় শিশুরা তাদের মাতৃভাষার মাধ্যমে বাংলা শব্দ ও লিপি শিখতে পারবে।

রাজ্যের স্কুলগুলিতে বিতরণ করা ‘শিক্ষক সহকারী পুস্তিকা’ পড়ে মৌলিক সাক্ষরতা সম্পর্কে আরও তথ্য পাওয়া যেতে পারে।

বিঃদ্রঃ

কোড়া ভাষায় ‘– ’ চিহ্নের ব্যবহার আছে। এই চিহ্নের ব্যবহার প্রবেশিকার একাধিক জায়গায় প্রয়োগ হয়েছে।

নীচে দেওয়া রেখাগুলিকে দেখো আর শূন্যস্থানে সেইরকম রেখা আঁকো:

উল্লম্ব রেখা :

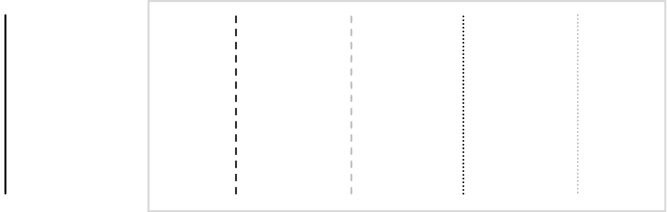

অনুভূমিক রেখা :

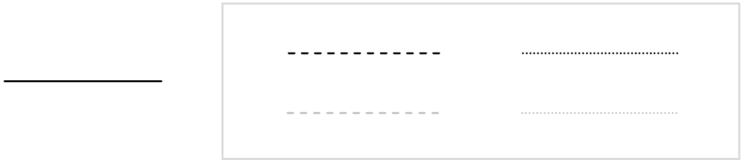

তির্যক রেখা ১ :

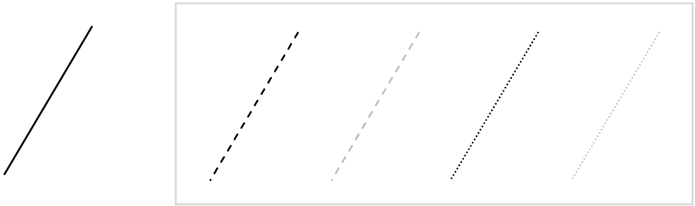

তির্যক রেখা ২ :

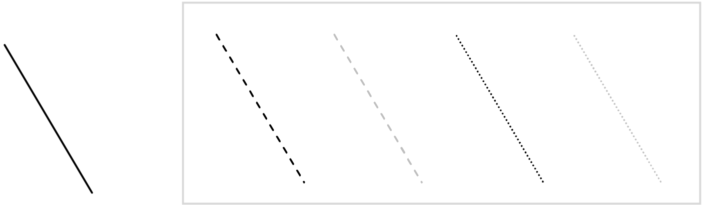

অর্ধবৃত্তকার রেখা ১ :

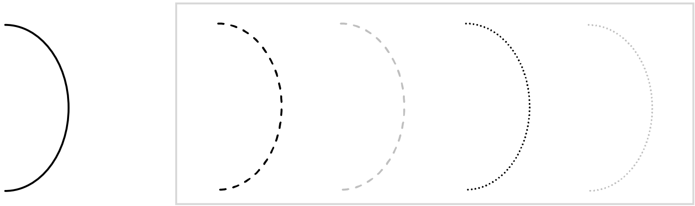

অর্ধবৃত্তকার রেখা ২ :

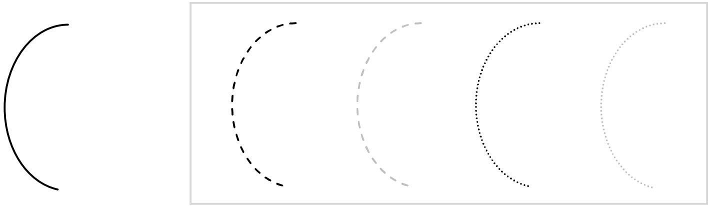

টীকা: শিক্ষক/শিক্ষকা এটি শেখাবেন যে কলম/পেনসিল কিভাবে ধরতে হবে আর উপরে দেওয়া স্থানগুলিতে রেখা কিভাবে বানাতে হবে।

কোড়া বর্ণমালা

স্বরবর্ণ

অ	আ	ই	উ	এ	ও		

মাত্রা →	◌া	◌ি	◌ু	◌ে	◌ো		

ব্যঞ্জন বর্ণ

ক	খ	গ	ঘ	ঙ
চ	জ	ঝ	ঞ	
ট	ঠ	ড	ঢ	
ত	থ	দ	ধ	ন
প	ব	ভ	ম	
র	ল	শ	স	হ
য়	ড়	◌ং	◌ঃ	◌ঁ

অতিরিক্ত চিহ্ন

-	◌্

বাংলা বর্ণমালা (যা কোড়াতে নেই)

স্বরবর্ণ				
ঈ	ঊ	ঋ	ঐ	ঔ

ব্যঞ্জন বর্ণ				
ছ	ণ	ফ	য	ব
ষ	ঢ়	ৎ		

অ

অড়ে

পাখি

সেতাঃরে অড়ে রাঃগাকু দারুরে
দারুটা ইঞেও অরাঃনা হেদেরে।

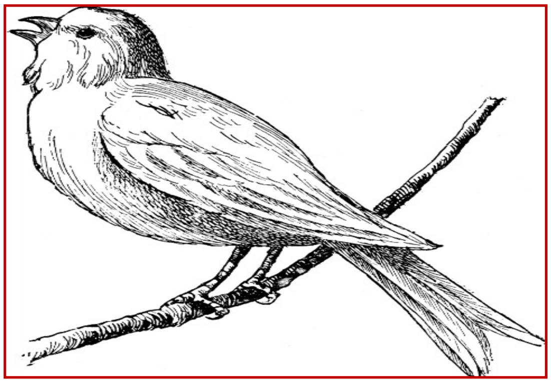

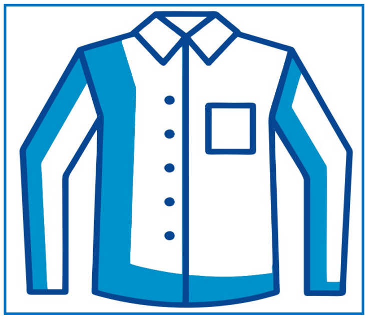

অরাঃ	ত-অরয়	সন-অ
বাড়ি	গুইসাপ	জামা

অ অ অ অ

আ

আমড়ু

আমড়া

আমড়ু জম হুয়ঃ-আ চপই চপইতে
ইস্কুল সেন হুয়ঃ-আ নির নিরতে।

আড়াঃ	জ-আন	দা-আ
শাক	জোয়াল	জল

আ আ আ আ

ই

ইপিল

তারা

অকয় সাজাতাকু নিদাঃনা রিমিল
জতদিকে লেলঃতানাকু ইপিল আর ইপিল।

ইচাঃ	মুইঞ	সুই
চিংড়ি	পিঁপড়ে	সূচ

ই ই ই ই

উ

উল

আম

হয়ো হুজুখা জোরে জোরে
উল হালাং সনাঃবু উল বারগিরে।

উরিঃ	উতু	চাউলি
গরু	তরকারি	চাল

উ উ উ উ

ও

লাওকা

নৌকা

লাওকারে দেঃকতে সাঙিন দিসুম সনয়ঞ গাডা-না চিতানরে সিঙি-নিদাঃ ধনয়ঞ।

		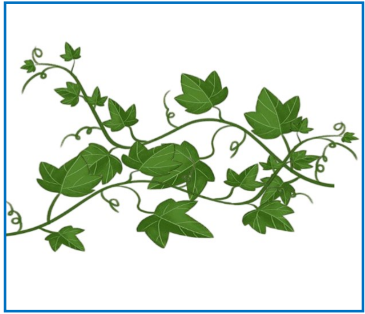
ভেডওয়া	তওয়া	ঝাও
ঢ্যাঁড়শ	দুধ	লতা

ও ও ও ও

এ

এডেল

শিমুল

এডেল দারুরে হুয়েকানা মেলায় এডেল বাহা দারুটৈরে জেন নুরেকানা রিমিলনা সেঙেলদা-আ।

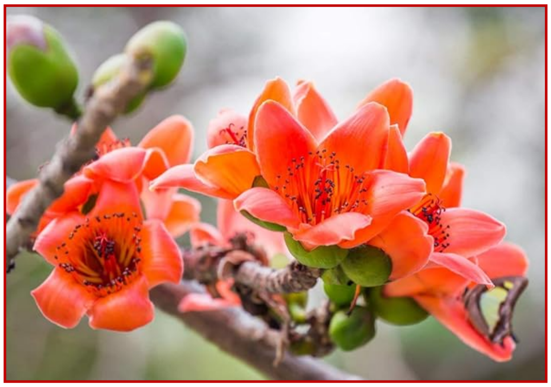

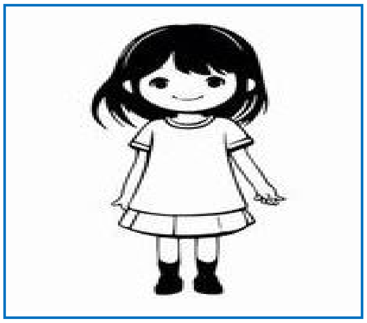	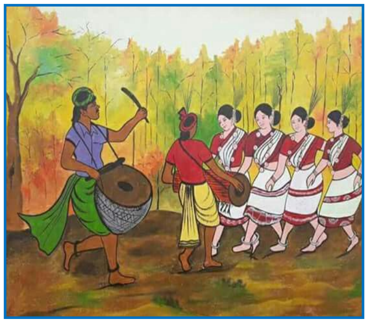	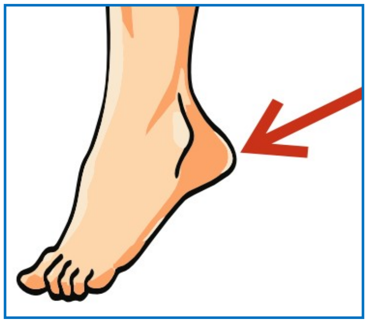
এরাহন	এনেঃ	এডি
বালিকা	নৃত্য	গোড়ালি

এ এ এ এ

ক

কসেড়

আখ

গাডা হেদেনা লয়ংরে,
কসেড় লাগাতাকু দিকুকু।
আয়ুঃবেতার আলে সনঃলে,
কসেড় আগু উকু উকু।।

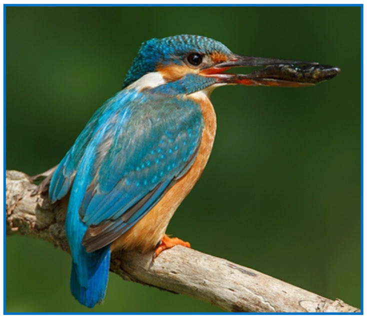	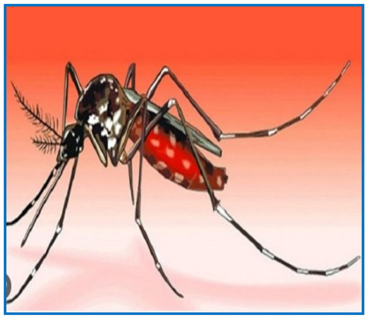	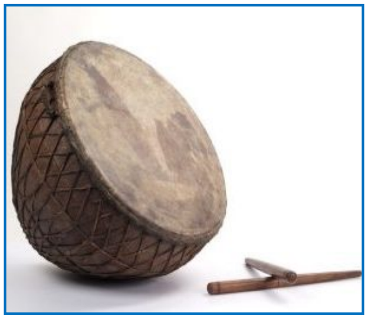
কিকির	সিক্‌রি	তামাক
মাছরাঙা	মশা	ধামসা

ক ক ক ক

খ

খদনা

উল্কি

তিহিং আলে বুরু পরব,
খদনা আগুতাঞ তিহি কাটারে ।
খদনা আগুতায় মাঞও তিঞে,
এনেঃলিং তিহিং বুরু লাতাররে ।।

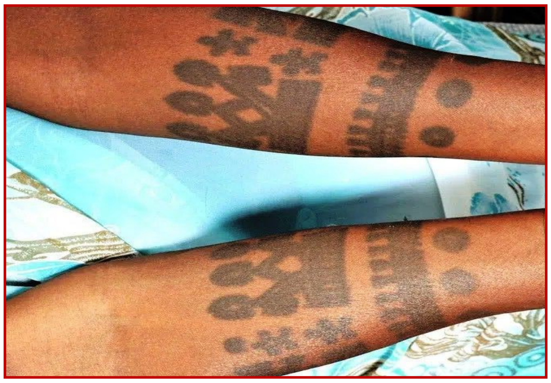

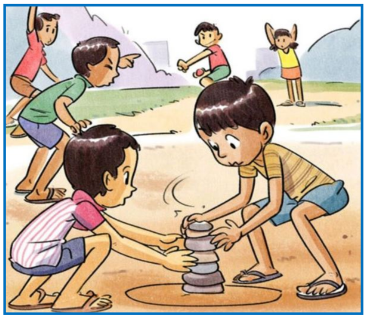

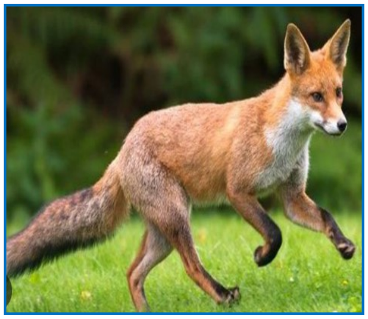

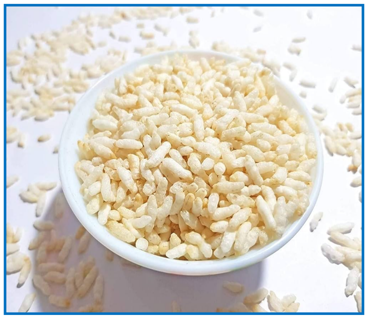

খলাংকুচি	খেখরি	খাজারি
খোলামকুচি	খেঁকশিয়াল	মুড়ি

খ	খ	খ	খ

গ

গহম

গম

মাঁঞ বাবাতে লয়ংরে,
গহম লাগাতাকু।
এনে গহমনা লয়ংরে,
এনেঃআবু উকু উকু।।

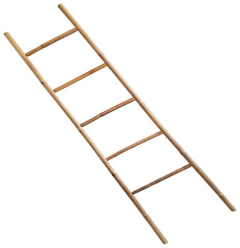

গজর	আঁড়গম	মুনগঃ ডাটা
বিছে	মই	সজনে ডাটা

গ গ গ গ

ঘ

ঘয়টা

ঘুঁটে

রাবাং দিনরে রাবাংকুয়া,
ঘয়টালঃ সেঙেল জা-আয়াবু।
সেতাঃবেতার দাতেন কতে,
রাচারে দুঃ দুঃতে জুরুঃবু।।

ঘাসাড়	ঘুটি	ঘুঙি
ঘাস	ঘটি	শামুক

ঘ ঘ ঘ ঘ

ঙ

বেঙকে

জিলিপি ফল

বির-না ভিতিররে,
হুয়েকানাকু বেঙকে বিলি।
আয়ুঃবেতার আগু সনঃলে,
ইঞও বঁকঃয় আর হিলি।।

তিলমিঙ	গেঙগুহারি	বিঙ
তিল	কেন্নো	সাপ

ঙ ঙ ঙ ঙ

চ

চকে

ব্যাঙ

দা-আ হুয়ঃ-আ চকে জেহেঃগাকু,
থপাং থপাং।
দুতম হুয়ঃ-আ তুন্দা-আ বাজাতানা,
ধপাং ধপাং।।

		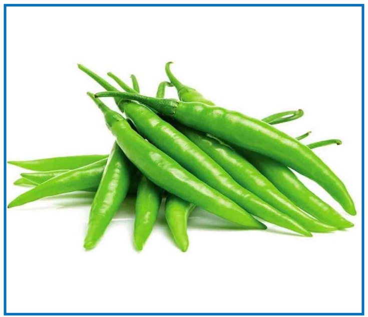
চটই	মচকা	মারচি
চড়াই পাখি	কাঠের চিরুনি	লংকা

চ চ চ চ

জ

জজঃ

তেঁতুল

ডাটা উদঃগাকু হাড়তুকু,
দুঃ দুঃতে জজঃ দারুরে।
এনেলেল কতে সেতাকু,
নিরভারাকু দারু বুঢঃরে।।

জাং	সারজম	তিজু
বীজ	শাল গাছ	পোকা

জ জ জ জ

ঝ

ঝনঃ

ঝাড়ু

মাঁঞ্ও তিঞ্ও রাচা জঃগায়,
মিঁয়ে ঝনঃদিঞ্ও।
বাবা তিহিং হুজুঃ তানায়,
ইঞ্ও ন-আ সন-অ নিঞ্ও।।

ঝুমকা	ঝান্‌টি	বিন্‌দিঝালি
ঝুনঝুনি	মাচা	মাকড়সা

ঝ ঝ ঝ ঝ

ঞ

খাঞচি

বড় ঝুড়ি

মিঃ খাঞচি বাহা দিঞে,
বুরু বঙায়াবু।
বঙা করে সারজম বাহা,
লুতুররে গুঁজয়াবু।।

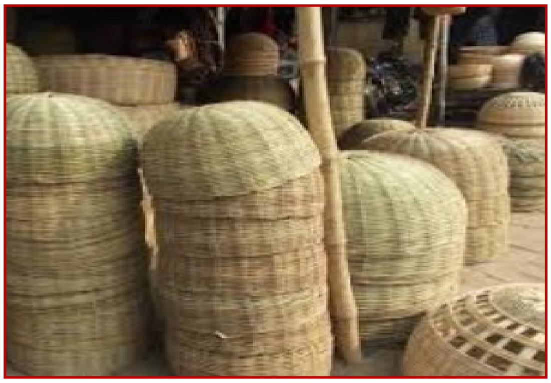

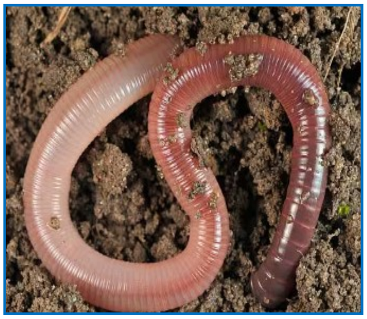

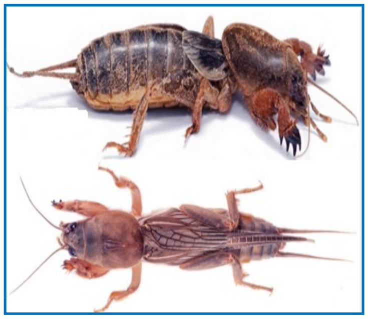

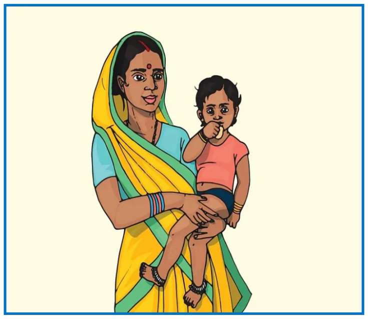

লেঞডে	রেঞ	মাঁঞ
কেঁচো	ঘুগরে পোকা	মা

ঞ	ঞ	ঞ	ঞ

ট

টলা

গ্রাম

কোডা টলা আলেঃ টলা,
হুজুঃপে দাড়াভাড়া।
লাতার টলা থেকে হুজুঃতানাকু,
মেলায় পাহি পেড়া।।

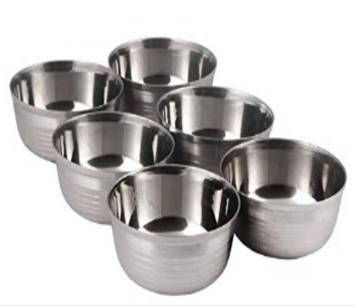

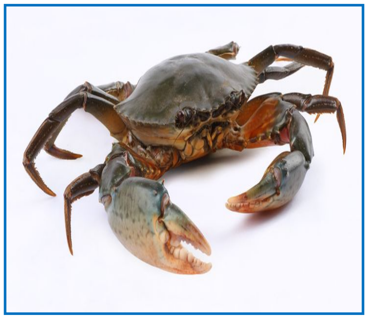

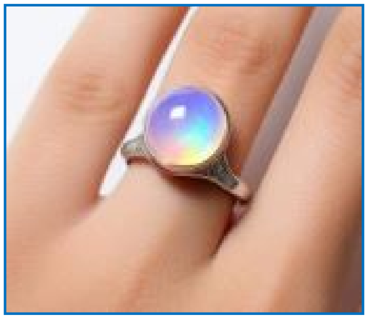

টাটিয়া	কাটকম	আঁগট
বাটি	কাঁকড়া	আংটি

ট ট ট ট

ঠ

ঠিলি

কলসি

তিহিঞ তালে হেঁদে গিডি পরব,
পাহি পেড়া হুজুঃকু অরাঃরে।
ঠিলি ঠিলি দা-আ আগু হুয়ঃ-আ,
এম হুয়ঃ-আ তাকো তিহি কাটারে।।

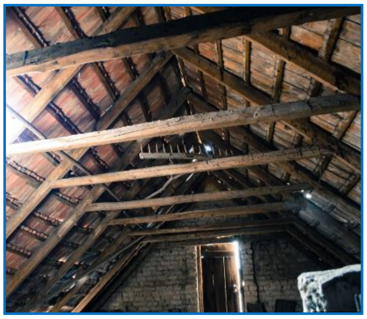

ঠাট	খাঁনঠাল	ঠেকা
বাড়ির কাঠামো	কাঁঠাল	ছোট ঝুড়ি

ঠ ঠ ঠ ঠ

ড

ডবাঃ

ডোবা

অরাঃ হেদেনা ডবাঃরে,
মুকরি পর্যন্ত দা-আ।
দা-আ লেল কতে ইঞকেদঃ,
ডুবুঃ সনায়তানা।।

ডাটা	জন্ডরা	কঁহডা
দাঁত	ভুট্টা	কুমড়ো

ড ড ড ড

ঢ

ঢডর

গর্ত

লয়ংরে মেলায় ঢডর,
ঢডররে কাটকম মেনাঃকু।
কাটকমকু লেলএতে হুডিং,
হাপে হাপেতে তাড়মভারাঃকু।।

কেঢা	ঢেংকি	ঢেপচু
মহিষ	ঢেকি	ফিঙে পাখি

ম ম ম ম

ত

তড়া

নূপুর

তড়া সুসুং কতে,
এনেঃবু বঙাবুরুরে।
সিঙি নিদাঃ দুরাংয়াবু,
আবো কোডা পরবরে।।

তায়েন	মাতকম	পান্‌চেত
কুমীর	মহুয়া	বাজপাখি

ত ত ত ত

থ

থতনা

থুঁতনি

মু লাতাররে মচা,
মচা লাতাররে থতনা।
থতনারে তিহি এমকতে,
আলো ভাবনা-আ।।

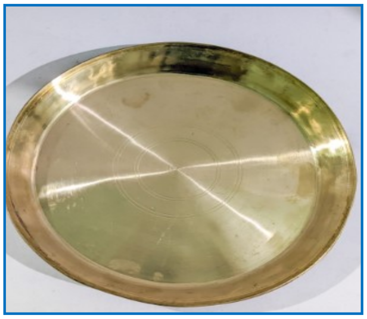	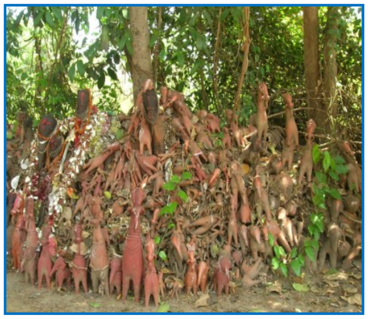	
থারি	থাঞ	সিথেন
থালা	পূজার বেদী	বালিশ

থ থ থ থ

দ

দরেয়া

সাগর

দরেয়ারে মেলায় দা-আ,
ঝানিঃগে কাকু লেলঞতানা।
দরেয়া-না দা-আরে,
জেহেঃগে সনায়ঞতানা।।

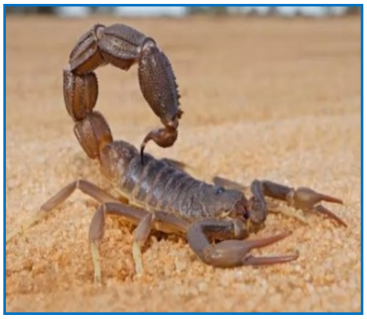

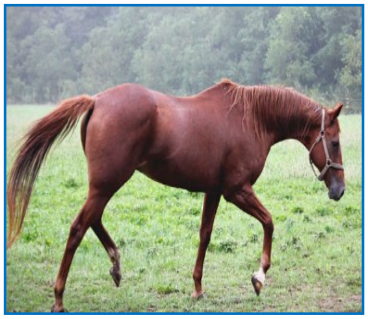

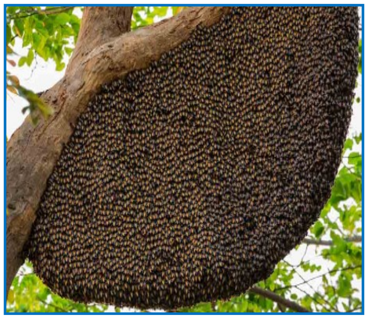

কিদিম কাটকম	সাদম	মোদ
কাঁকড়া বিছে	ঘোড়া	মৌচাক

দ দ দ দ

ধ

ধুদুর

পেঁচা

পুঁড়ি পুঁড়ি ধুদুর,
ধনঃকু দারু ঢডররে।
জজমা জম নাগান,
উড়ুংগকু নিদাঃবেতাররে।।

ধুরি	ধিরি	গুরগুধিরি
ধুলো	পাথর	শিলনোড়া

ধ ধ ধ ধ

ন

নামাল

বটগাছের ঝুড়ি

বাড়ি দারুঃনা নামালরে,
আয়ুঃবেতার ঝুলঃবু।
সঞঝেবেতার অরাঃরে,
কোডা বই পড়াঃবু।।

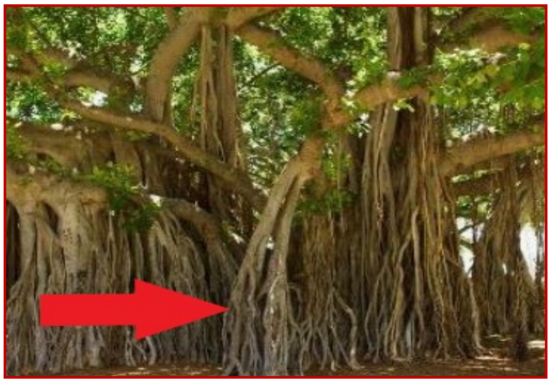

হিরিন	গুনথুঃরি	তাবেন
হরিণ	পালক	চিড়ে

ন ন ন ন

প

পঢরা

ধোঁদল

জিলিং জিলিং পঢরা হুয়েকানা,
অরাঃ হেদেনা দারুটেরে।
বকঃবয়াতে আরগুয়ালিং,
এমেয়লিং তিহিংনা উতুরে।।

পাড়কম	পিপলি	পাঃডুল
খাট	প্রজাপতি	ফড়িং

প প প প

ব

বকাঃ

বক

পুঁড়ি পুঁড়ি বকাঃকু,
ওটাং তানাকু বহঃ চিতানরে।
ইঞকে-হঃ ওটাং সনায়তানা,
আকোঃলাকা রিমিল ভিতিররে।।

বুরু	বায়র	কুম্ব
পাহাড়	দড়ি	কুঁড়ে ঘর

ব ব ব ব

ভ

ভেডি

ভেড়া

ভেডি আতিং তানাকু,
আলে লয়ংরে।
লয়ংটা হারুঃকানা জেন,
ভেডি-না পুঁডি উঃরে।।

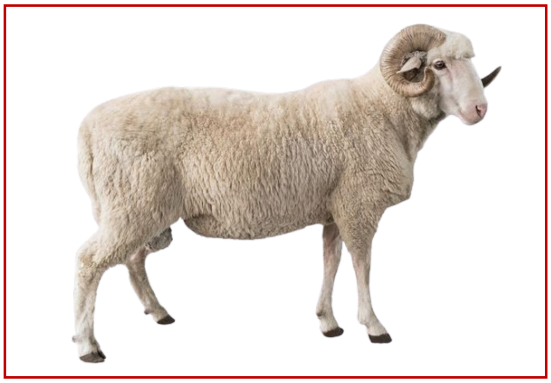

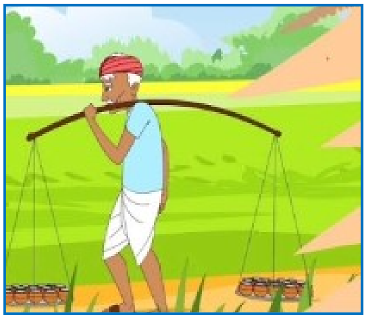

ভারম	ভ্যাঙাড়	ভমর
ভারবাঁকু	বেগুন	ভ্রমর

ভ ভ ভ ভ

ম

মলং

কপাল

ডাঙারে এনেঃ সেনকতে,
লাগাকিনিঞ মলংরে।
ইজেম ইজেমতে গিতিয় নিঞ,
মাঁঞনা কয়ংরে।।

মেরম	অরময়	জানুম
ছাগল	ছারপোকা	কাঁটা

ম ম ম ম

র

রম্বা

কলা

রম্বা দারুরে রম্বা জঃকানা,
হাড়তু দু-আকানায়।
হার নাগান চিঞতি হুঃলোঞ,
তাঃও কায় নিরতানায়।।

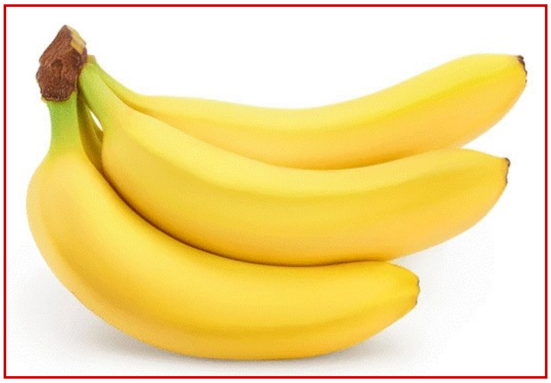

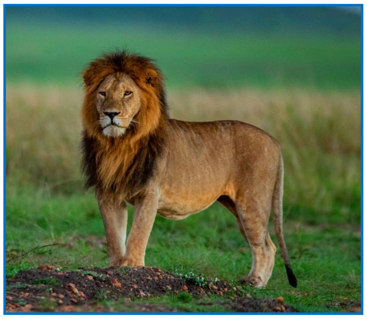

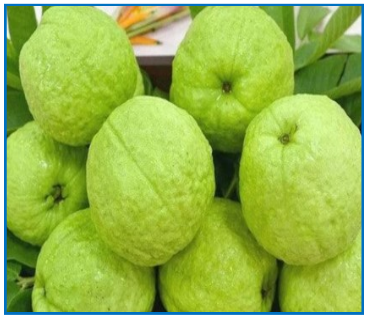

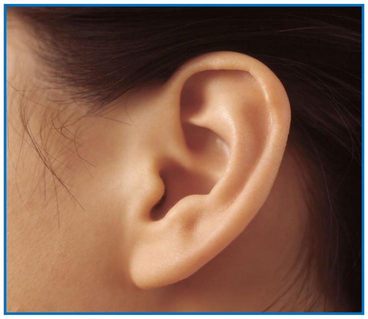

বিরনিঃ	আঁজির	লুতুর
সিংহ	পেয়ারা	কান

র র র র

ল

লয়ং

ক্ষেত

বাবা সেঃকানায় লয়ংসি,
ইঞ্ও সন-আঞ্ও ইস্কুলরে।
তারসিংবেতার মাঁডি জমেয়লিং,
দারুনা উমুলরে।।

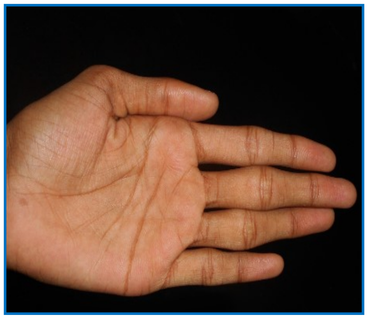

লওয়া	তালখা	রিমিল
ডুমুর	তালু	আকাশ

ল ল ল ল

শ

শলে

শোলমাছ

গাডা-না দা-আরে,
শলে হাকু ধনা-আকু।
শলে আকু-না উতু জমতে,
জতয়গে বুগিন আকারেয়কু।।

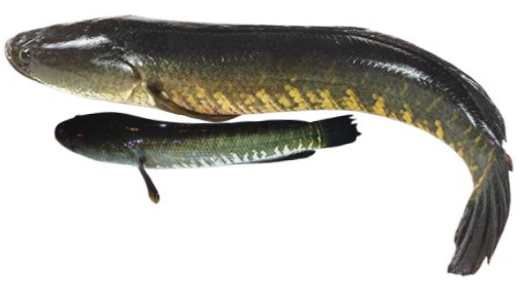

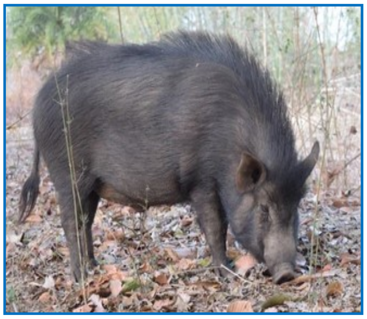

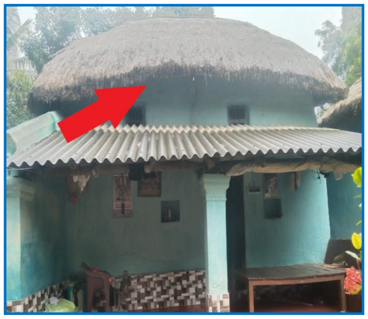

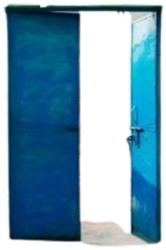

শুকরি	কুশলি	শিলপিং
শূকর	চিলেকোঠা	কপাট

শ শ শ শ

স

সশঃ

কাজুবাদাম

টলানা হনকু আলে,
তিহিন সনঃলে সশঃ বিররে।
খাঞচি খাঞচি সশঃ আরগুইলে,
জমেইলে দুঃ দুঃতে বুরু লাতাররে।

সারু	লঃসয়	সিজু
কচু	কাদা	বেল

স স স স

হ

হরা

রাস্তা

আলে টলানা হেদে হেদে,
মিঁয়ে হরা সেঃকানা।
সেহেন সেহেনতে হরাটা,
আলে ইস্কুল বলঃকানা।।

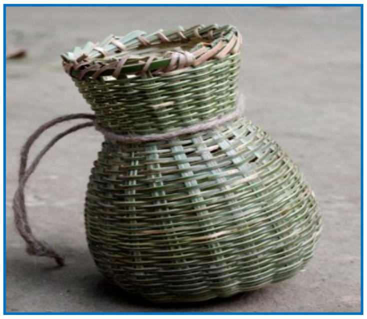

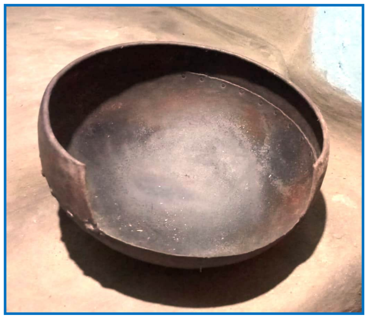

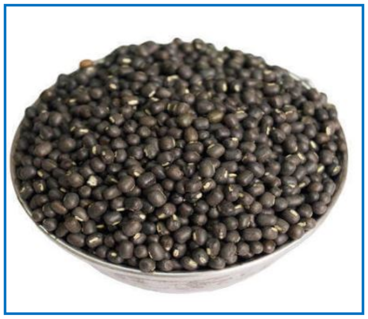

হয়ং	অঃহয়	রাহাড়ি
খালৈ	খোলা	মাষকলাই

হ হ হ হ

ড়

হাড়তু

হনুমান

আয়ুঃবেতার হাড়তু হুজুঃকুনা,
আলেঃ অরাঃ হেদেরে।
জেহেঃ জেহেঃতে এনেঃকুনা,
আলেঃ অরাঃ কুডোমরে।।

		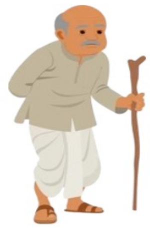
রেগড়া	কুড়চা	হাড়াম
বাদ্যযন্ত্র	টমেটো	বৃদ্ধ

ড় ড় ড় ড়

য়

মাঁয়্ঃ

বাঁশ

সাডি তানা কেঁচ কেঁচ,
মাঁয়্ঃ বিররে।
মাঁয়্ঃ সাঃকতে ঝিলঃঞ তিনিঞ,
অতের থেকে চিতানরে।।

কায়রা	সাঃগায়	হাঃপায়
কলাপাতা	চোরকাটা	জোঁক

য়	য়	য়	য়

◌ং

সাসাং

হলুদ

সাসাং সুনুম লাগাকতে,
হুজুঃতানায় নোয়া বয়ো।
মারাং বকঃয়না দুতাম তিহিন,
টলানা হরঃ হুজুঃতানাকু কঃয়ো।।

চেলাং	বুলুং	মাঁয় পং
হাড়ি	লবন	বাঁশের কোড়ল

◌ং ◌ং ◌ং ◌ং

◌ঃ

হাটাঃ

কুলো

মাঞ তিঞে হুরু ওটাংগায়,
মারাং মিঁয়ে হাটাঃরে।
হাটাঃটেরে দুঃ দুঃতে,
ওটাং সনায়তানা রিমিল চিতানরে।।

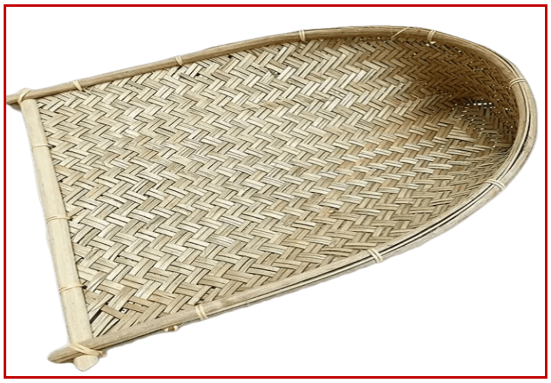

জেরঃলে	চাঃলম	তারুঃ
শালিক	লেজ	বাঘ

◌ঃ ◌ঃ ◌ঃ ◌ঃ

◌ঁ

পেঁঙে

জোনাকি

তালা বিররে অকয়
আলা জাঃতাকু।
সেঃহেন কতে লেলেঞ,
প্যাঁঙে উড়ুংকানাকু।।

কাঁহু	রুঁডঃ	গাঁড়ু
কাক	বনবিড়াল	পিঁড়ি

◌ঁ	◌ঁ	◌ঁ	◌ঁ

স্বর	মাত্রা চিহ্ন	উদাহরণ	উদাহরণ
অ		নক	হরঃ
		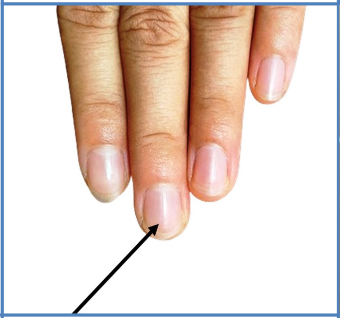	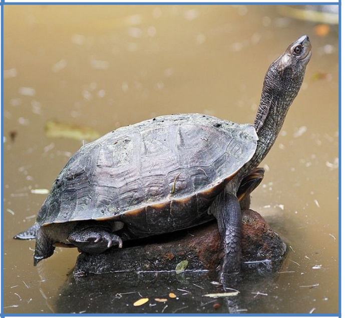
আ	◌া	গাডা	বানা
		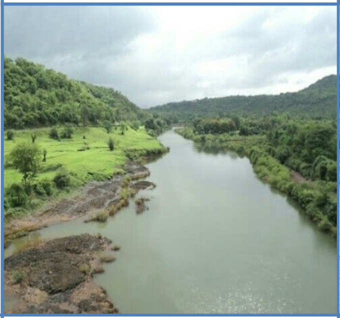	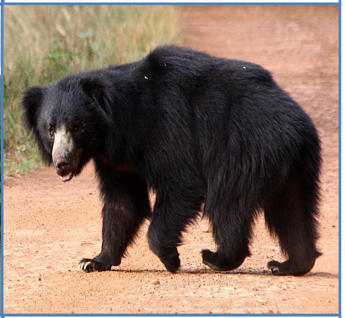
ই	◌ি	সিম	বিলি
		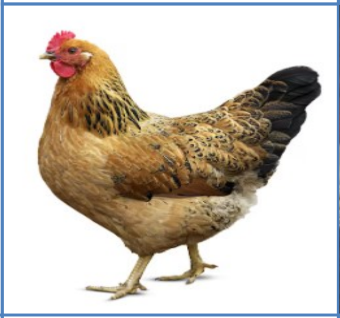	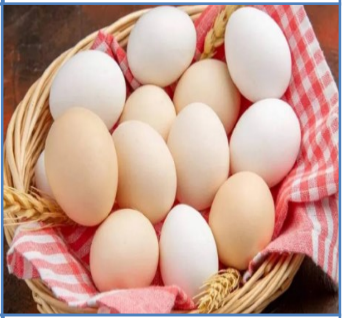
উ	◌ু	রুতু	বুসুঃ
		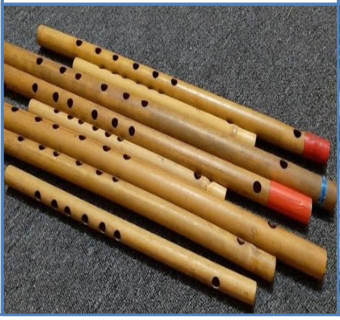	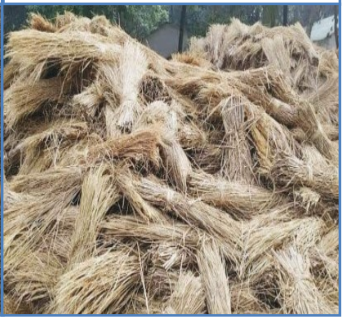

স্বর	মাত্রা চিহ্ন	উদাহরণ	উদাহরণ
এ	ে◌	গেডে 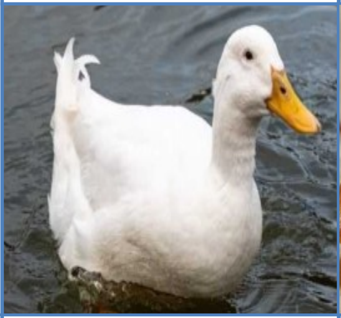	তেতে 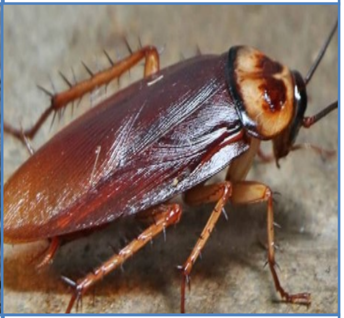
ও	ে◌া	সাকোম 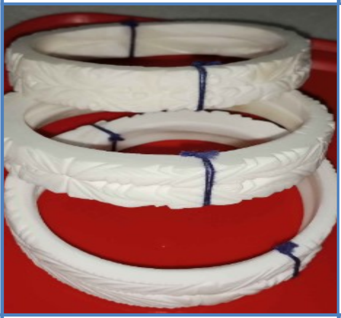	পিপো 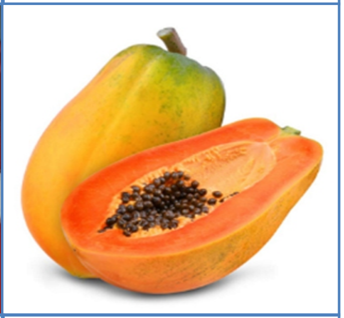
	\	পিন্‌ডেদা 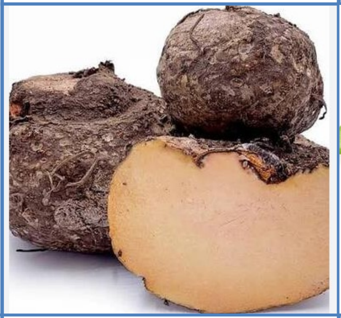	মাল্‌হান 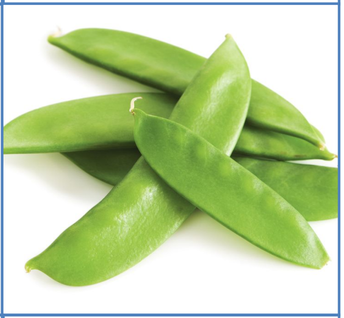
	–	হতয়-অ 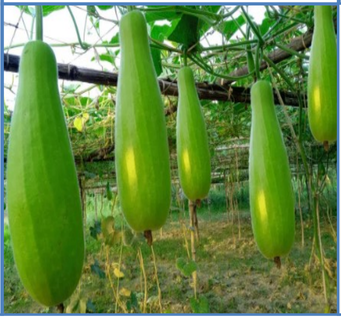	বাদর-অ 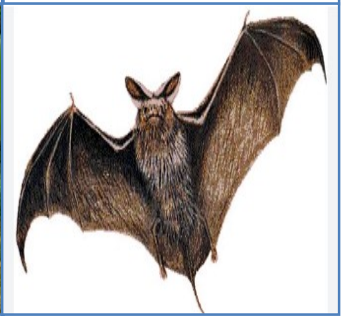

সংখ্যা

১	মিঁ	এক	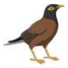
২	বার	দুই	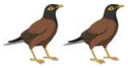
৩	আপি	তিন	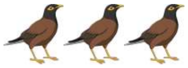
৪	উপুন	চার	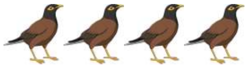
৫	মড়ে	পাঁচ	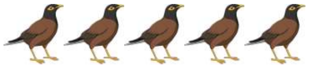
৬	তুরুই	ছয়	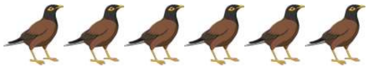
৭	ইয়া	সাত	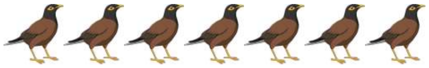
৮	ইরাল	আট	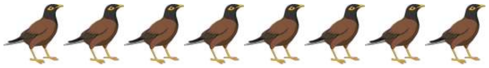
৯	আরে	নয়	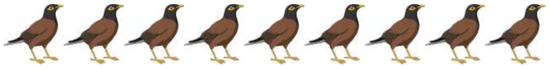
১০	গেলে	দশ	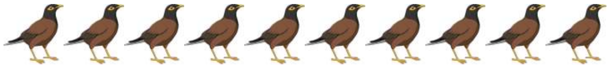
১১	গেমিত	এগারো	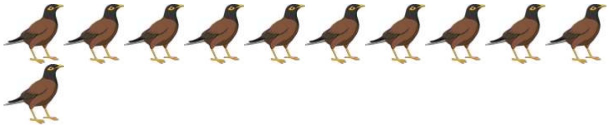
১২	গেবার	বারো	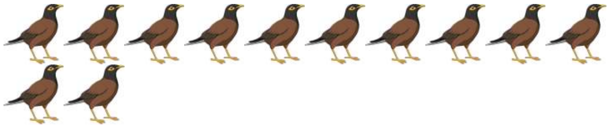
১৩	গেয়াপি	তেরো	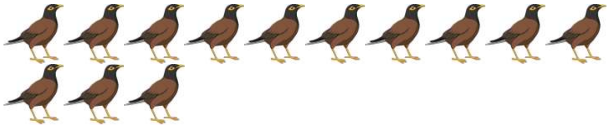
১৪	গেপুন	চৌদ্দ	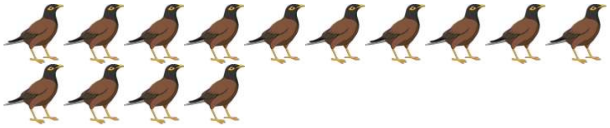

১৫	গেমড়ে	পনেরো	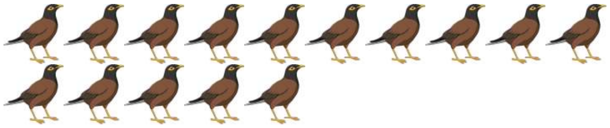
১৬	গেতুরুই	ষোল	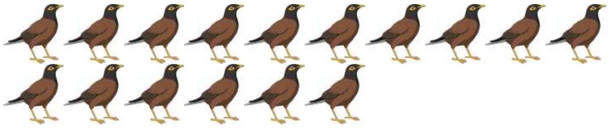
১৭	গেইয়া	সতেরো	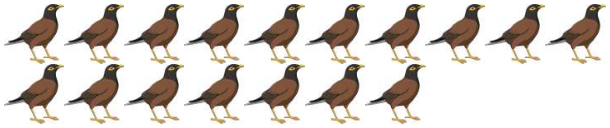
১৮	গেইরাল	আঠারো	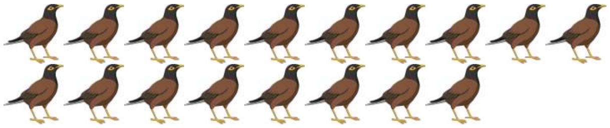
১৯	গেয়ারে	উনিশ	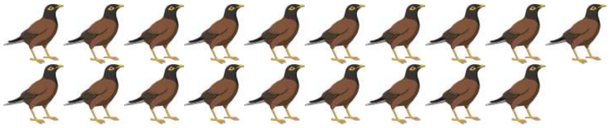
২০	বাগেল	কুড়ি	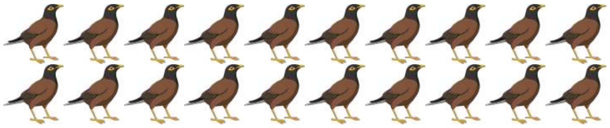

১	১	১	১	
২	২	২	২	
৩	৩	৩	৩	
৪	৪	৪	৪	
৫	৫	৫	৫	
৬	৬	৬	৬	
৭	৭	৭	৭	
৮	৮	৮	৮	
৯	৯	৯	৯	
১০	১০	১০	১০	

১১	১১	১১	১১	
১২	১২	১২	১২	
১৩	১৩	১৩	১৩	
১৪	১৪	১৪	১৪	
১৫	১৫	১৫	১৫	
১৬	১৬	১৬	১৬	
১৭	১৭	১৭	১৭	
১৮	১৮	১৮	১৮	
১৯	১৯	১৯	১৯	
২০	২০	২০	২০	

বাংলা বর্ণমালা

স্বর বর্ণ

অ	আ	ই	ঈ	উ	ঊ	ঋ
এ	ঐ	ও	ঔ			

ব্যঞ্জন বর্ণ

ক	খ	গ	ঘ	ঙ	
চ	ছ	জ	ঝ	ঞ	
ট	ঠ	ড	ঢ	ণ	
ত	থ	দ	ধ	ন	
প	ফ	ব	ভ	ম	
য	র	ল	ব	শ	
ষ	স	হ	ক্ষ	ড়	
ঢ়	য়	ৎ	◌ং	◌ঃ	◌ঁ

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

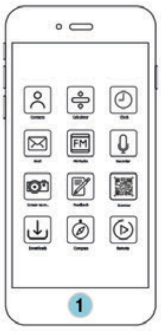
1

Install ePathshala Scanner app from Play Store and open

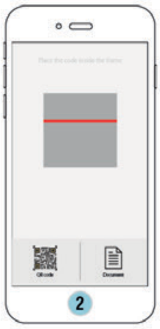
2

Get ready with QR code scanning window

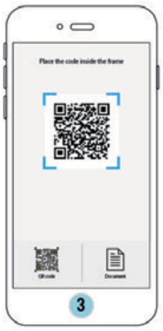
3

Place scanner above the QR code

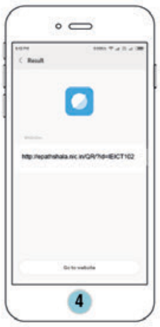
4

Select and click on the link

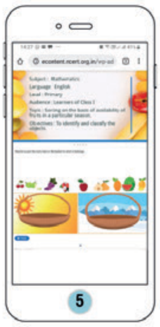
5

Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA**

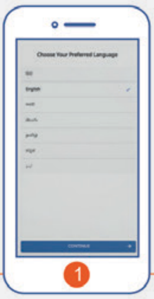
①

Select preferred language

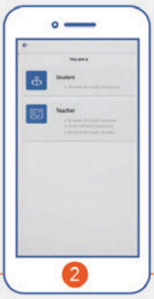
②

Choose your role: Student or Teacher

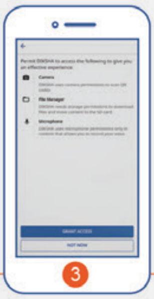
③

Grant access and allow app permissions

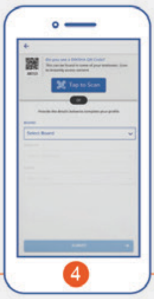
④

Tap to scan the QR code

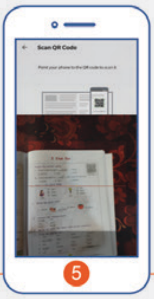
⑤

Focus camera on the QR code in textbook

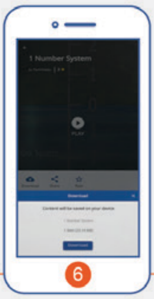
⑥

Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-I (54)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
1	ANAL	12	HALABI (HALBI)	23	KONDA	34	MANIPURI	45	SANTALI (WEST BENGAL)
2	ANGAMI	13	HMAR	24	KORKU	35	MAO	46	SAVARA (SORA)
3	AO	14	JATAPU (KUVI)	25	KOYA	36	MISHMI	47	SHERPA
4	ASSAMESE	15	JUANG	26	KUI	37	MISING	48	SÜMI (SEMA)
5	BHUTIA	16	KABUI (RONGMEI)	27	KUKI	38	MIZO	49	TAMANG
6	BODO	17	KARBI	28	KURUKH/ORAON	39	MOGH	50	TANGKHUL
7	DEORI	18	KHANDESHI	29	KUWI	40	MUNDARI	51	TANGSA
8	DESIA	19	KHARIA	30	KUZHALE (KHEZHA)	41	NEPALI	52	TIWA (LALUNG)
9	DIMASA	20	KINNAURI	31	LIANGMAI	42	NYISHI (NISSI)	53	TULU
10	GADABA (GUTOB)	21	KISAN (KUNHU)	32	LIMBU	43	RAI	54	WANCHO
11	GARO	22	KODAVA (COORGI/KODAGU)	33	LOTHA	44	SANTALI (ODISHA)		

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-II (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
55	ADI	60	HO	65	KOM	70	MARAM	75	RENGMA
56	BHUMIJ	61	KHIAMNIUNGAN	66	KONYAK	71	NOCTE	76	SHINA
57	CHANG	62	KOCH	67	LADAKHI	72	PASHTO	77	TAMIL
58	GONDI	63	KODA (KORA)	68	LEPCHA	73	POCHURY	78	TIBETAN
59	HALAM	64	KOLAMI	69	MARA (LAKHER)	74	RABHA	79	YIMKHIUNG (YIMCHUNGRE)

PRIMER DEVELOPMENT IN PROGRESS (45)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
80	ARABIC/ARBI	89	GUJARATI	98	LAHAULI	107	MUNDA	116	SANTALI (JHARKHAND)
81	BALTI	90	HINDI	99	LAHNDA	108	NICOBARESE	117	SINDHI
82	BENGALI	91	KANNADA	100	LAI (PAWI)	109	ODIA	118	TELUGU
83	BHILI/BHILODI	92	KASHMIRI	101	MAITHILI	110	PAITE	119	THADOU
84	BISHNUPURIYA (BISHNUPRIYA MANIPURI)	93	KHASI	102	MALAYALAM	111	PARJI	120	URDU
85	CHAKHESANG	94	KHOND/KONDH	103	MALTO	112	PHOM	121	VAIPHEI
86	CHOKRI	95	KOKBOROK (TRIPURI)	104	MARATHI	113	PUNJABI	122	ZELIANG
87	DOGRI	96	KONKANI	105	MARING	114	SANGTAM	123	ZEME (ZEMI)
88	GANGTE	97	KORWA	106	MONPA	115	SANSKRIT	124	ZOU

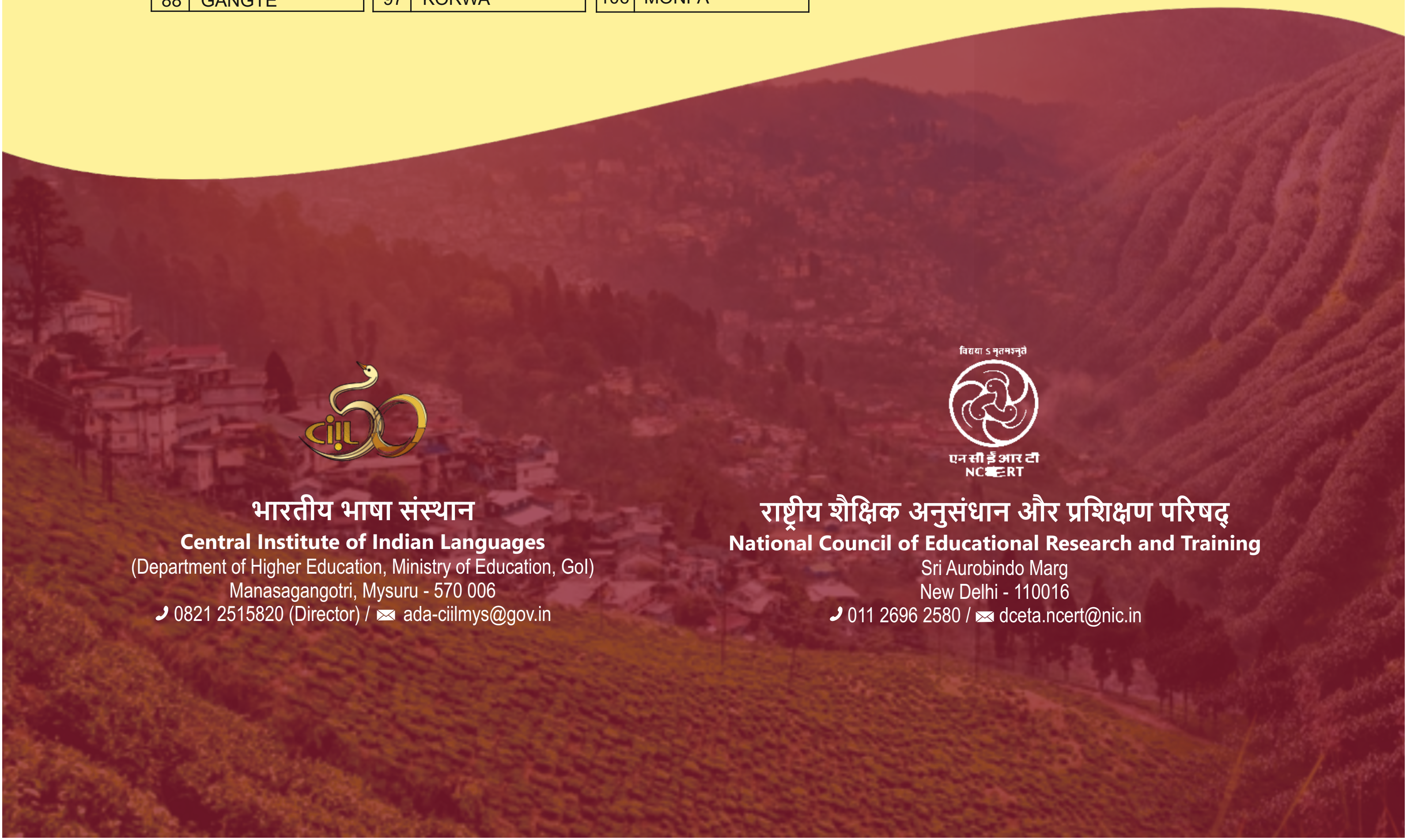

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
☎ 0821 2515820 (Director) / ✉ ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
☎ 011 2696 2580 / ✉ dceta.ncert@nic.in